Volume: 4 Issue: 10 Pages: 150-152

हिमाचल प्रदेश के मंडी जनपद की करसोग में पाण्डवकालीन मंदिर: एक ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर

[*1] डॉ. सुमेधा शर्मा

[*1] सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग शासकीय महाविद्यालय करसोग जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 19/Sep/2025
Accepted: 24/Oct/2025

***Corresponding Author**
डॉ. सुमेधा शर्मा
सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग शासकीय महाविद्यालय करसोग जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश:
हिमाचल प्रदेश, जिसे देवभूमि के नाम से जाना जाता है, अपनी प्राकृतिक सुंदरता, प्राचीन मंदिरों,और समृद्ध विरासत के लिए विश्वविख्यात है। इस राज्य का मण्डी जिला, जो अपनी धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, करसोग घाटी जैसे अनछुए और रहस्यमयी स्थानों का घर है। करसोग घाटी जो हिमालय की गोद में बसी है, न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जानी जाती है, बल्कि पाण्डव कालीन मंदिरों के लिए भी प्रसिद्ध हैं। ये मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि महाभारत काल के ऐतिहासिक और पौराणिक घटनाओं से भी जुड़े हैं। करसोग घाटी, हिमाचल के मंडी जिले में स्थित एक मनोरम और शांत घाटी है जो समुद्र तल से लगभग १४०४ मीटर की ऊंचाई पर बसी है यह घाटी हिमालय की पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला में स्थित और अपनी हरी-भरी वादियों,घने जंगलों,सेब के बगीचों, और प्राचीन मंदिरों के लिए जानी जाती है। मण्डी शहर से लगभग १२५ किलोमीटर और शिमला से १०० किलोमीटर की दूरी पर स्थित करसोग घाटी, पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के लिए एक अनछुआ स्वर्ग है। इस घाटी की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत पांडवों के समय से जुड़ी हुई है, और यहां के मंदिर महाभारत काल की कहानियों को जीवंत करते हैं करसोग घाटी का नाम 'कर'और 'सोग' से मिलकर बना है जिसका अर्थ है 'दैनिक शोक'। प्राचीन भारतीय महाकाव्य महाभारत में इस स्थान के बारे में एक प्रसिद्ध कथा मिलती है। द्वापर युग में जब पाण्डव बनवास में थे, तब उन्होंने कुछ समय इसी स्थान पर बिताया था। ऐसा माना जाता है कि यहीं से पाण्डव हिमालय पार के उत्तर की ओर गंधमादन पर्वत पर पहुंचे थे, जहां भीम की हनुमान जी से भेंट हुई थी। परंपरा कहती है कि यह नगर एक असुर के शाप से ग्रस्त था। जब पाण्डव बनवास में भटक रहे थे, तो वे कुछ समय के लिए ममेल नामक इस गांव में रुके थे। उस दौरान, गांव के पास एक गुफा में एक असुर ने डेरा डाल रखा था। उस असुर के प्रकोप से बचने के लिए, गांव वालों ने तय किया कि वे रोजाना उसके भोजन के लिए एक व्यक्ति को उसके पास भेजेंगे ताकि वह जल्दी से पूरे गांव को न मार डाले। कुछ समय बाद, जिस घर में पाण्डव ठहरे थे, उस घर के लड़के की बारी आई। यह देखकर उस लड़के की बारी आई। यह देखकर लड़के की मां रोने लगी, पांडवों ने कारण पूछा तो उसने कहा कि मुझे अपने पुत्र को असुर के पास उसके भोजन के रूप में भेजना है। भीम उस लड़के के बजाय उस असुर के पास गए। उनके बीच भयंकर युद्ध हुआ और भीम ने उस असुर को को मार डाला और गांव के दैनिक शोक को कम किया। करसोग पारम्परिक रूप से हिन्दू धर्म के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां मंदिर पांडवों द्वारा स्थापित किया गए थे।

मुख्य शब्द: पाण्डवकालीन मंदिर, धार्मिक धरोहर, ऐतिहासिक, हिमाचल प्रदेश के मंडी

प्रस्तावना:

1. मंदिर हिमाचल की धरोहर,
2. पाण्डवों की विरासत ममलेश्वर महादेव मंदिर
3. पाण्डवों की विरासत कामाक्षा देवी मंदिर
4. महाभारत को जीवंत करता माहू नाग मंदिर
5. आस्था और सौंदर्य का संगम शिकारी माता मंदिर पर्यटन की दृष्टि से
6. कमरुनाग झील और मंदिर
7. वास्तुकला और सांस्कृतिक महत्व

1. मंदिर हिमाचल की धरोहर

देवभूमि हिमाचल वह स्थान है जहां कण-कण में देवता निवास करते हैं। यह स्थान भक्तों के लिए वरदान है। यहां के मंदिर भारत के इतिहास और भक्तों की आस्था को समेटे हुए हैं। यहां बने मंदिर

पैगोडा शैली के हैं, जहां आयताकार पत्थर और लकड़ी की संरचनाएं हैं, जिनकी छतें एक के ऊपर एक रखी गई हैं, जिससे वे बहुमंजिला इमारतों जैसे लगते हैं। करसोग घाटी के कुछ प्रमुख मंदिर हैं जिनमें ममलेश्वर महादेव मंदिर, कामाक्षा देवी मंदिर, कमरू नाग मंदिर, शिकारी माता मंदिर और माहुनाग मंदिर।

2. पाण्डवों की विरासत ममलेश्वर महादेव मंदिर

ममलेश्वर महादेव मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और पांडवों द्वारा निर्मित गांव के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। इस मंदिर का महाभारत काल में घटित घटनाओं से बहुत गहरा सम्बन्ध है और यह 5000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। ममलेश्वर महादेव मंदिर में महाबली भीम से जुड़ी कई निशानियां हैं, जिन्हें देखने के लिए लोग दूर- दूर से आते हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

पहला भीम का प्राचीन ढ़ोल, जिसकी लंबाई 6फीट से ज्यादा है। इस विशाल प्राचीन ढ़ोल को देखने के लिए देशी- विदेशी पर्यटक मंदिर आते हैं। दूसरा है इस मंदिर में पाँच शिवलिंग, जिसकी स्थापना पाण्डवों ने की थी। अब बारी है मंदिर में रखा एक गेंहू का दाना, जो 5000 साल पुराना है। इस गेंहू के दाने का वज़न 200-250 ग्राम है। पुरातत्व विभाग ने मंदिर में रखी इन वस्तुओं को अति प्राचीन बताया है। इस मंदिर में आखिरी धूना या अग्नि है जिसके बारे में कहा जाता है कि यह महाभारत काल से लगातार जल रहा है। याद रहे, भीम ने असुर का वध करके गांव को उसके शाप से मुक्ति दिलाई थी। कहा जाता है कि यह अखण्ड धूना भीम की विजय स्मृति में चल रहा है। ऐसा माना जाता है कि ऋषि परशुराम और भृगु ने भी यहां पर तपस्या की थी।

3. पाण्डवों की विरासत कामाक्षा देवी मंदिर

ऐसा माना जाता है कि देवी का यह शक्तिपीठ सतयुग के स्वर्ण युग का है। हालांकि, शोधकर्ताओं का मानना है कि यह मंदिर परशुराम या पाण्डव काल का हो सकता है क्योंकि सतयुग का मंदिर शायद इतना लंबा न चला हो। खैर यह और गहन शोध का विषय है, लेकिन आस्थावान लोग इसे अलग नज़रिए से देखते हैं।इस मंदिर में एक अष्टधातु की मूर्ति है जो पाण्डव कालीन की मानी जाती है। मेले के दौरान, इन सभी मूर्तियों को रथ पर विराजमान किया जाता है। यह मेला साल में दो बार दुर्गाष्टमी के अवसर पर लगता है। इन्हें देखने के लिए हजारों लोग उमड़ते हैं। लोग दूर- दूर से देवी भगवती के दर्शन के लिए यहां आते हैं। मान्यता यह है कि कामाक्षा देवी मंदिर में दर्शन करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है। कहा जाता है कि दुनियां में कामाक्षा देवी के केवल तीन ही मंदिर हैं। पहला है असम का प्रसिद्ध कामख्या देवी मंदिर। दूसरा है तमिलनाडु के कांचीपुरम में और तीसरा मण्डी जिला के करसोग में स्थित कामाक्षा देवी मंदिर। देवी के इस मंदिर में परशुराम का उल्लेख मिलता है, और यहां लकड़ी की नक्काशी कामाक्षा देवी मंदिर की शोभा बढ़ाती है।

4. महाभारत को जीवंत करता माहू नाग मंदिर

माहू नाग को सूर्य पुत्र कर्ण का अवतार माना जाता है। सूर्य पुत्र कर्ण भगवान सूर्य और क्षत्रिय माता कुंती के पुत्र थे। सूर्य पुत्र कर्ण को भारतीय इतिहास के महानतम योद्धाओं में से एक माना जाता था। महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने छल से कर्ण का वध कर दिया था, लेकिन कर्ण को मारने के बाद अर्जुन ग्लानि से भर गए थे। कहा जाता है कि अर्जुन ने अपने नाग मित्रों की मदद से कर्ण के पार्थिव शरीर को लाकर सतलुज नदी तट पर तत्तापानी के पास उसका अंतिम संस्कार किया था। उसी चिता में एक नाग प्रकट हुआ वह नाग यहीं बस गया। लोग आज भी इस नाग देवता की पूजा माहू नाग के रुप में करते हैं।

5. आस्था और सौंदर्य का संगम शिकारी माता मंदिर पर्यटन की दृष्टि से

करसोग घाटी में 2,850 मीटर की ऊंचाई पर स्थित शिकारी माता मंदिर एक और पाण्डव कालीन मंदिर है। यह मंदिर माता दुर्गा को समर्पित है और इसका नाम "शिकारी माता " इसलिए पड़ा क्योंकि माना जाता है कि प्राचीन काल में शिकारियों ने यहां माता की पूजा अपनी जीत के लिए की थी। मण्डी ज़िले का सबसे ऊंचा शिखर है। इस मंदिर की अनोखी विशेषता यह है कि यह मंदिर छतविहीन है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर पर छत बनाने की कई बार कोशिश की गई, लेकिन हर बार यह असफल रही। इसे माता की इच्छा के रूप में देखा जाता है, जो खुले आकाश के नीचे पूजा करना पसन्द करती है। शिकारी माता मंदिर तक पहुंचने के लिए पहले जंजैहली और करसोग से पैदल यात्रा करनी पड़ती थी,अब मंदिर तक आप गाड़ी में जा सकते हैं। यह रास्ता घने जंगलों और औषधीय जड़ी- बूटियों से भरा हुआ है, जो इस यात्रा को और भी रोमांचक बनाता है। मंदिर से धौलाधार पर्वत श्रृंखला और बल्ह घाटी का मनोरम दृश्य दिखाई देता है, जो इसे तीर्थयात्रियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श स्थान बनाता है।

6. कमरू नाग झील और मंदिर

कमरू नाग झील, करसोग घाटी से लगभग 51 किलोमीटर की दूरी पर 3334 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह झील और इसके किनारे स्थित कमरूनाग मंदिर पाण्डव काल से सम्बन्ध है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, कमरुनाग यश महाभारत काल के एक राजा थे। जिनकी पूजा पाण्डवों ने की थी इस मंदिर में पत्थर की प्राचीन मूर्ति स्थापित है, और श्रद्धालु अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने पर झील में सोने, चांदी और सिक्के चढ़ाते हैं। इस परम्परा के कारण झील के तल में कीमती धातुएं जमा हो गई हैं, जो इस स्थान के ऐतिहासिक महत्व को और बढ़ती है। कमरूनाग मंदिर तक पहुंचने के लिए रोहान्ड़ा से 6 किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी पड़ती है, जो प्रकृति प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव है। हर साल जून - जुलाई में यहां एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु और पर्यटक भाग लेते हैं।

7. वास्तुकला और सांस्कृतिक महत्व

करसोग घाटी के पाण्डव कालीन मंदिरों की वास्तुकला हिमाचली शैली की एक उत्कृष्ट मिसाल है। इन मंदिरों में पत्थर और लकड़ी का उपयोग प्रमुखता से किया गया है, और इनकी संरचना ऐसी है कि वे कठोर हिमालयी का सामना कर सकें। मंदिरों में नक्काशीदार लकड़ी के खंभे, पत्थर की दीवारें, और पारम्परिक छतें देखी जा सकती हैं। कुछ मंदिरों, जैसे शिकारी माता मंदिर, में छत का अभाव एक अनूठी विशेषता है, जो इसे अन्य मंदिरों से अलग करता है। इन मंदिरों का सांस्कृतिक महत्व भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। करसोग घाटी की लोक - संस्कृति,जो अपनी पारम्परिक रीति - रिवाजों और उत्सवों के लिए भी जानी जाती है,इन मंदिरों के इर्द- गिर्द विकसित हुई है। हर साल इन मंदिरों में मेले और उत्सव आयोजित होते हैं, जो स्थानीय लोगों और पर्यटकों को एक साथ लाते हैं। इन मेलों में पारम्परिक नृत्य, संगीत और स्थानीय व्यंजनों का आनंद लिया जा सकता है।

निष्कर्ष:

करसोग घाटी के पाण्डव कालीन मंदिर हिमाचल प्रदेश की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न हिस्सा है। ममलेश्वर महादेव मंदिर का प्राचीन धुना और गेहूं का दाना, शिकारी माता मंदिर की छत विहीन संरचना, और कमरू नाग मंदिर की पौराणिक झील इस क्षेत्र को एक अनूठा और रहस्यमयी आकर्षण प्रदान करते हैं।

ये मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि पाण्डवों के समय की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कहानियों को भी जीवित रखते हैं। करसोग घाटी की प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण,और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाती है। यह उन लोगों के लिए एक स्वर्ग है जो इतिहास धर्म और प्रकृति के संगम का अनुभव करना चाहते हैं। पाण्डव कालीन मंदिरों की यह यात्रा न केवल आध्यात्मिक शांति प्रदान करती है, बल्कि हिमालय की गोद में बसे इस अनछुए स्वर्ग की खोज करने का अवसर भी प्रदान करती है

सन्दर्भ सूची:

1. ओम चंद हांडा, पश्चिमी हिमालय की लोक कलाएं, इंडस पब्लिकेशन कम्पनी, नई दिल्ली, शिमला, प्र० सं०1991
2. एस०आर० हरनोट, हिमाचल के मंदिर व उनसे जुड़ी लोक कथाएं, मिनर्वा बुक हाउस, शिमला, प्र० सं० 1991
3. कांशीराम आत्रेय, हिमाचली लोकसाहित्य मंजूषा, मण्डी प्रकाशन, टिहरा मण्डी, प्र० सं०
4. जगमोहन बलोखरा, हिमाचल प्रदेश सामान्य ज्ञान, एच० जी० पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम ससंस्करण 2006
5. जगमोहन बलोखरा, हिमाचल प्रदेश, एच० जी० पब्लिकेशन, नई दिल्ली चौथा ससंस्करण - 2006